मानवता के लिए पूंजीवाद अभिशाप है

पूँजीवाद का उदय हुए लगभग 300 वर्ष हो रहा है। फ्रान्स क्रांति के बाद 1789 में पूँजीवाद मजबूत हुआ जिसे लगभग 230 साल हुए हैं. पूँजीवाद का चरम अवस्था साम्राज्यवाद है और 20वीं सदी में साम्राज्यवादियों ने मुनाफे के लालच और बाजार दखल करने के लिए 2–2 विश्वयुद्ध करवा चुके हैं, जिसमें करोड़ों की संख्या में मौतें हुई हैं। अधिकांश मौतें शोषित–पीड़ित आम जनता के बच्चे (सेना) और मजदूरों की हुई हैं। मुनाफे के लालच में आज भी साम्राज्यवादी विश्व के विभिन्न देशों में युद्ध करवाते हैं ताकि उनका माल बिके और मुनाफा बढ़े।

ऐसे अनेक घटनाएँ विश्व में घटती रहती है जिसमें पूँजीपति वर्ग की लालच और उत्पादन के चक्कर में मजदूरों की मौत हो जाती है क्योंकि उत्पादन रूके नहीं, उत्पादन के लिए जोखिम लेकर उत्पादन कराया जाता है. ऐसे में मजदूरों की मौत होती है तो मजदूरों को ही दोष देकर अपना पल्ला झाड़ लिया जाता है,फिर चाहे मजदूर सरकारी हो या गैरसरकारी। पूँजीवाद का एक ही लक्ष्य होता है मुनाफा–अति मुनाफा और मुनाफे पर मुनाफा कमाना। इसके लिए जरूरी है उत्पादन यानि उत्पादन–अति उत्पादन और उत्पादन पर और अधिक उत्पादन चाहे इसमें मजदूरों की मौत क्यों न हो, और मौत लगातार हो रही है। कुछ ताज़ी घटनाएँ:

(1) पुलगाँव के रक्षा डिपो में 6 ठेकेदारी मजदूरों की मौत. जो काम पहले रक्षा विभाग के कर्मचारी करते थे वही काम ठेकेदारी मजदूरों से करवाया जाता है। रक्षा विभाग के कर्मचारियों का वेतन लगभग 35000 रूपया प्रतिमाह है वहीं पर वही काम ठेकेदारी मजदूरों से 5500 से लेकर 7800 प्रतिमाह पर करवाया जाता है। नियमों को ताक पर रखकर काम करवाया जाता है। इसी वजह से ठेकेदारी मजदूरों की मौत हुई है।

(2) भिलाई स्टील प्लान्ट में 14 मजदूरों की मौत . ये 14 मजदूरों की मौत भी उत्पादन और मुनाफे से जुड़ा है। उत्पादन रूके नहीं इसलिए पाईपलाइन में गैस चालू रखकर दुरूस्ती का काम चालू रखा गया था। जबकि गैस की सप्लाई का काम बंद रखकर पाईप से हवा द्वारा गैस निकालने के बाद दुरूस्ती का काम किया जाना चाहिए. उत्पादन रूके नहीं और दुरूस्ती का काम भी हो जाय, इस चक्कर में 14 मजदूरों की मौत हुई है.

(3) यह स्टील प्लान्ट की पहली घटना नहीं है। इसके पहले भी स्टील प्लान्ट में इस तरह की घटनायें हुई है। कुछ पुराने घटनाओं का जिक्र करना सही रहेगा कि मुनाफे के लालच में किस तरह से मजदूर मारे जाते हैं।

(4) 1975 में चासनाला कोल माईन्स में 700 मजदूरों की मौत हुई थी: खतरे के निशान लगाकर जहाँ पर से कोयला निकालना मना किया गया था फिर वहीं से कोयला निकाला गया। पानी का दबाव दीवार सह नहीं पाई, कोयला खदान में अचानक पानी भर गया और 700 मजदूरों की अचानक मौत हो गई।

(5) 1984 में भोपाल गैस कांड में 3784 लोगों की मौत: गैस का पाईप लाईन कमजोर हो गया था। गैस का पाईप को बदलना जरूरी था। गैस के पाईप को नहीं बदला गया। पाईप में गैस का आना–जाना चालू रहा और घटना हुई जिसमें मजदूरों के साथ साथ शहर के 3784 लोग मारे गये थे. गैस का हानिकारक प्रभाव आज तक जारी है।

(6) इसी तरह से प्रबंधन के लापरवाही के वजह से मुंबई के बंदरगाह में अभी तक कुल 2500 से ज्यादे मजदूर मारे जा चुके हैं।

(7) इस तरह की घटनाएँ विदेशों में भी होते रहती है जिसमें मजदूरों की जान जाती है। खासकर कोल माईन्स के क्षेत्र में फ्रान्स में 1099 एवं चीन में 1549 मजदूरों की मौत हुई है। इस तरह हो रही घटनाओं में मौतों की कुल संख्या लाखों में हो सकती है। अगर ध्यान से देखा जाय तो विदेशों में भी रक्षा उद्योग, माईनिंग उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग और अन्य उद्योगों में भी घटनाओं में हजारों की संख्या में मौतें होती रहती हैं। उदहारण के लिए अमेरिका, चीन, फ्रान्स, रूस इत्यादि।

यह सभी मजदूरों की मौतें केवलमात्र दुर्घटना नहीं है. इन सभी घटनाओं में पूँजीपति वर्ग की लालच और मुनाफा छिपा है और इन सारी बिमारिओं की जड़ पूँजी है। इसलिए मार्क्स पूँजी में लिखते हैं कि पूँजीपति वर्ग अपने मुनाफे के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। मुनाफे के लिए जगह बदलना, एक देश से दूसरे देश जाना, प्रशासन को खरीद लेना और धमकी देना, मुनाफे का अनुपात ज्यादा हो तो किसी भी अपराध से वे पीछे नहीं हटते। वैसे भी राज्य व्यवस्था अपराध का पोषक होता है। पूँजीवाद ही अपराध को पालता और पोसता है. नही तो हर रोज जिस आतंकवाद पर हल्ला मचाये हुए हैं उस आतंकवाद को आधुनिक हथियार कहाँ से मिलता है ? जबकि, आतंकवादियों के पास हथियार बनाने का कारखाना नहीं है। पूरे दुनिया में चाहे उद्योगों में मजदूर मरें या फिर भीड़ में बम विस्फोट हो इन सबका कारण मुनाफा

कमाने की होड़ ही है। मुनाफे की होड़ में मजदूर और गरीब की मौत होती है और पूँजीपति वर्ग मुनाफे के द्वारा अपनी पूँजी का संचय निरंतर जारी रखता है.

मौजूदा समय में पूँजीवाद ने मशीन के साथ साथ मजदूरों को भी मशीन में तब्दील कर दिया है.। यूनियन नेताओं के साथ मिलकर उत्पादन का टारगेट फिक्स कर दिया जाता है. फिक्स किया गया उत्पादन देना मजदूरों के लिए अनिवार्य है। टारगेट पूरा करने के चक्कर में दुर्घटना को न्योता दिया जाता है; दुर्घटनाएँ होती है और मजदूरों की जानें जाती है किंवा हाथ–पैर कटते रहती है। मजदूरों के नवाबों (अर्थात यूनियन नेताओं, क्योंकि इन नेताओं को उत्पादन नहीं देना पड़ता है) के वजह से मजदूर आज अपनी पहचान खोकर उत्पादन का मशीन बन गए हैं जिन्हें सिर्फ जीने भर का मजदूरी दिया जाता है, ताकि दूसरे दिन वे काम पर आ सके और पूँजी का उत्पादन जारी रहे. आज पूरे दुनिया में श्रम शक्ति की लूट, खनिज सम्पदा की लूट, पर्यावरण का अनदेखा करना, मजदूरों के काम के घंटों में वृद्धि, कम मजदूरी में काम करवाना पूँजीपति वर्ग ने अपना एकमेव उद्देश्य बना लिया है और इस उद्देश्य को पूरा करने के मार्ग में जो भी बाधा बनता या तो उन्हें खरीदा जाता है अथवा डराया जाता है या फिर उन्हें मौत दी जाती है। ये मौत का खेल सत्ता परिवर्तन से रूकनेवाला नहीं है क्योंकि सत्ता की राजनीति धूर्त होती है, भ्रष्टाचार अपने चरम सीमा पर होती है,धर्म, अंधविश्वास और पोंगापंथ का बोलबाला होता है. इसलिए मनमोहन का विकल्प मोदी और मोदी का विकल्प राहुल नहीं हो सकता। मार्क्स कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में कहते हैं आधुनिक राज्य का कार्यकारी मंडल, पूँजीपति वर्ग के सम्मिलित हितों का प्रबन्ध करनेवाली कमेटी के अलावा कुछ नहीं होता है। इन तमाम बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए समाज से पूंजीवादी उत्पादन, लूट की पूँजीवादी आज़ादी को खत्म करना होगा। इस ऐतिहासिक कार्य को समझकर संपन्न करने के लिए हम मजदूरों को आपस का संवाद, आपसी एकता और सामूहिक संघर्ष पर ध्यान केन्द्रित करना होगा.यह सिर्फ एक देश में नहीं बल्कि पूरे विश्व के पैमाने पर अपनाना होगा और इस काम में अगुवा दस्ता होंगे मजदूर कार्यकर्ताएं एवं मजदूरों के बीच से निकले हुए मजदूर-बुद्धिजीवी तथा वे तमाम बुद्धिजीवी जो मजदूरों के साथ अविछिन्न रूप में जुड़े हुए हैं.

आइए सही राह पर कदम बढ़ायें!

ललन किशोर सिंह, नागपुर. ता.१ जनवरी २०१९